txnh'k xIRk dh futh ekU;rkvk ,o dyk fpUru l iHkkfor fp=

* Mk- vpuk f}onh

'kks/k i= & fp=dyk

भटकनों में अर्थ होता है
टूटना कब व्यर्थ होता है।

ऐसी विचारधारा वाले कवि-चित्रकार जगदीश गुप्त पूर्व का ऑक्सफोर्ड कहे जाने वाले इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठाकुल हिन्दी विभाग में बरसों बरस तक तेजस्वी अध्यक्ष रहे वे अपने संवेदनशील स्वभाव, प्रखर चेतना, जिज्ञासु प्रवृत्ति और सृजनोन्मुखी प्रतिभा के बल से जनजीवन के तल में लहराती हुई युग चेतना तक पहुँचे और अपने व्यक्तित्व की गहराईयों में उसको पलने दिया। उन्हों. समाज और दैनिक जीवन की घटनाओं के ऊपरी रूप को न देख उसके मूल में अन्तर्निहित चेतन और अचेतन शक्तियों के क्रीड़ा विलास को अपनी पैनी दृष्टि से देखा क्योंकि वे जानते थे कि पत्तियों और तनों में पानी डालने से कोई लाभ नहीं होता, अत: जडों को सींचन अनिवार्य है। डॉ. जगदीश गुप्त जी ने कतिपय निजी मान्यताएँ कला के क्षेत्र में स्थापित कीं वे निम्नलिखित हैं-

1- चित्रकला सब कलाओं की आँख है। उसका अस्तित्व अन्य सभी कलाओं तथा काव्य रूपों में अन्तर्व्याप्त है। साहित्य में प्रयुक्त 'लेखन', 'वर्णन', 'चित्रण', 'निरूपण', 'अंकन', 'प्रदर्शन', 'निदर्शन' तथा 'रंजन' आदि शब्द इसी सत्य के प्रमाण हैं.
2- अतीत में फैली हुई जड़ों तक पहुँच कर उसके निजी रूप को पहचानना तथा उसे नई चेतना प्रदान करना आवश्यक है जिस.. उसका अस्तित्व बना रहे। इसके लिए शिलाचित्रों, भित्तिचित्रों, लोककला, बालकला, मृण्मूर्तियों एवं विभिन्न शिल्पों से प्रेरणा ग्रहण करना विदेशी वादों के अनुकरण से कहीं अधिक श्रेयस्कर है।
3- कला मूलत: सार्वभौमिक आयाम रखती है तथापि पौर्वात्य संस्कार भारतीयता को समझने में अधिक उपयोगी एवं हितकर सिद्ध होते हैं, कला का अनुवाद नहीं होता।
4- अमूर्त सत्य, विज्ञान और आध्यात्म का विषय हो सकता है परन्तु यथार्थ जगत कला का विषय है।
5- मानव विकास में निजी अनुभव, निजी विवेक तथा निजी प्रतिभा सबसे अधिक सहायक होते हैं।
6- वैज्ञानिकता सत्य की उपलब्धि में बाधक नहीं, पर मूलत: जीवन-सत्य कलाधर्मी है। यह तत्व दृष्टि उन्हें रवीन्द्र नाथ ठाकुर से मिली।
7- कविता और कला दोनों में 'भाव' और 'लय' आधारभूत तत्व हैं जो आज भी प्रधान प्रेरक सिद्ध होते हैं।
8- विश्लेषण से अधिक संश्लेषण महत्वपूर्ण है क्योंकि वही आत्मीयता को धारण करने की शक्ति रखता है।[1]

साहित्य का कार्य स्वयं कला का कार्य है या कला है परन्तु साहित्य का मुख्य कार्य है कलाओं को प्रेरणा देना। साहित्य का विषय कला होता है। यदि हम साहित्य की उत्पत्ति पर ध्यान दें, तो देखेंगे कि जीवन में कला का कार्य सबसे पहले आता है। जीवन को बनाए रखना सुन्दरतापूर्वक जीवन निर्वाह करना स्वयं कला का कार्य है और आदिकाल से है इसी के अंतर्गत अन्य सभी कलाओं का प्रादुर्भाव हुआ।[2]

कवि एवं चित्रकार जगदीश गुप्त जी की वैचारिक सोच ही उनकी मौलिकता का पर्याय थी। उनका साहित्य तथा कला के प्रति निजी चिंतन उनकी कृतियों में स्पष्ट दिखाई देता है। उनका निजी कला चिंतन था-

1- कला मेरे लिए बहुलोचना नदी है और कविता अभिव्यक्ति की चुनौती 'कवि वही जो अकथनीय कहे।'
2- मेरी कला अपना साक्षात्कार कराने में केन्द्रीय भूमिका अदा करती है.
3- कला पहले व्यक्ति से व्यक्ति को जोड़ती है फिर व्यक्ति से समाज को। व्यक्ति और समाज, शब्द और अर्थ मेरी दृष्टि में अर्द्धनारीश्वर की तरह अन्योन्याश्रित हैं।
4- असंतोष से उपजती है नवीनता। नवीनता ही परम्परा को शक्ति देती है। मूल्यबोध में स्वानुभव सर्वोपरि है। समाहित अन्त:करण 'स्व' और 'पर' का भेद मिटा देता है।

लोक-कला के संस्कार उन्हें अपनी माँ से प्राप्त हुए थे जैसे कि भारतीय संस्कृति में सभी त्यौहारों पर अलग-अलग तरह की दीवार तथा जमीन पर अल्पना बनाने की प्रथा है वैसे ही उनकी माँ भी त्यौहारों में परम्परानुसार अल्पना बनाया करती थीं। उनकी माता

द्वारा बनाये गये चौक, जिसे उन्होंने देव उठनी एकादशी में बनाया, उसकी अनुकृति गुप्त जी ने इंक से कागज पर की है।

जगदीश गुप्त के चित्रों को देखकर यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि वे प्रागैतिहासिक चित्रों की ओर आकर्षित थे। यह उन्होंने स्वयं भी स्वीकार किया है– भारत के इतिहास में विभिन्न कलात्मक उपलब्धियों को जब मैं पदचिह्न के रूप में देखता हूँ तो मुझे सहस्त्रों वर्षों तक विस्तृत कला परम्परा के पीछे एक सजीव गतिमान कला का व्यक्तित्वबोध होता है। पदचिह्नों की दृढ़ता आकार और स्पष्टता से जैसे चलने वाले के स्वभाव और स्वरूप का बहुत कुछ अनुमान हो जाता है। उसी प्रकार भारतीय कला के प्रौढ़ तथा महान व्यक्तित्व का पर्याप्त आभास मुझे विगत युगों की भारतीय कलाकृतियाँ कराती रही हैं।3 भारत वर्ष में अत्यन्त प्रारम्भिक युग से ही कला चेतना अदम्य शक्ति के साथ सक्रिय एवं गतिशील दिखायी देती है। एक चित्रकार होने के नाते प्रागैतिहासिक शक्ति और सहज सौन्दर्य ने गुप्त जी को सदैव आकर्षित किया, अत: अनेकों रेखाचित्र तथा चित्र उन्होंने प्रागैतिहासिक चित्रों से प्रभावित होकर निर्मित किये। एक कागज के समतल चित्रक्षेत्र पर तीन वृषभ आकृतियाँ काली स्याही से चित्रित की हैं। तीनों आकृतियों से भिन्न-भिन्न गति तथा पर्याप्त दूरी का आभास होता है। एक अन्य चित्र 'डाँस से प्रेरित' जिसे कागज पर इंक पेन से बनाया गया है। एक नृत्य करती हुई मानवाकृति जिसमें पर्याप्त गति और लय का चित्रण है। एक अन्य तैलचित्र अश्वारोही जिसे खुरदरे धरातल (हार्डबोर्ड) पर चित्रित किया है। पीले समतल धरातल के अग्रभूमि में ही गेहुएँ रंग का अश्व सफेद मानवाकृति चित्रित है। प्रस्तुत चित्र में अश्वाकृति अश्व जैसी नहीं है, तथा मानवाकृति भी घुड़सवारी की स्थिति में अंकित नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह चित्र प्रागैतिहासिक चित्र की अनुकृति हो। रंग भी प्रागैतिहासिक चित्रों के समान ही प्रयोग किये हैं।

प्रागैतिहासिक चित्रकला से प्रेरित एक अन्य कृति में पतंग काटने एवं लूटने का भाव चित्रित किया गया है। जगदीश गुप्त बाल्यकाल से पतंग उड़ाने के बहुत शौकीन थे। एक बार पतंग उड़ाते-उड़ाते छत से गिर भी गये थे। अत: एक बड़े हार्डबोर्ड पर उन्होंने काले तथा भूरे रंग के मिश्रण से पंतग काटने व लूटने के आनन्द का चित्रण तैल रंगों से किया है। पतंग पकड़ने के लिए बच्चे हर तरफ से दौड़े चले आ रहे हैं। चित्र के समतल धरातल की अग्रभूमि में चित्रित मानवाकृति एक आगे वाली मानवाकृति को हाथ से पकड़कर उससे आगे निकलने की कोशिश में है। एक डोरी पतंग के नीचे पड़ी है। समतल पृष्ठभूमि के ऊपरी भाग में लाल एवं सफेद रंग की एक पतंग भी छोटी-सी डोरी के साथ चित्रित है। जिसे पकड़ने के लिए सभी आकृतियाँ दौड़ी जा रही हैं। दो आकृतियाँ हाथ में लकड़ी का झाड़ लिये हुए हैं। आकृतियों के चित्रण में परिप्रेक्ष्य का ध्यान रखा गया है, आगे की आकृतियाँ बड़ी हैं तथा पीछे की आकृतियाँ सू अन्तराल में धीरे-धीरे छोटी होती गई हैं। सभी मानवाकृतियों में गति, प्रसन्नता एवं जोश का प्रभावशाली चित्रण किया गया है।

पतंग

मल्लाह परिवार

जगदीश गुप्त जी सदैव अपने आस-पास के परिवेश से प्रभावित थे। जब वे मोतीमहल में रहते थे वहाँ उनके आस-पा मल्लाह परिवार रहते थे। उनके पारिवारिक रहन-सहन के दैनिक क्रियाकलापों में धूप में बैठकर सिर देखने के दृश्य को आधुनिकता का पुट देकर गुप्त जी ने एक चित्र प्रस्तुत किया है। एक बड़े चित्रक्षेत्र में तीन आकृतियों को बड़े ही सुन्दरतापूर्ण ढंग से संयोजित किया है। प्रस्तुत चित्र में एक महिला आकृति दूसरी आकृति के सिर को देख रही है और उसके सामने बैठी आकृति उसे हाथों से चिढ़ा रही है। आकृतियों को विकृत ऐंठनदार चित्रित करके इसी भाव को रूपायित किया गया है। चित्र का समस्त सक्रिय अन्तराल काले रंग से तथा सहायक अन्तराल में सफेद धरातल के कुछ भाग में पीले रंग के प्रयोग से आकृतियाँ अधिक प्रभावशाली बन गई हैं। चित्र 'मल्लाह

परिवार' लोककला शैली से प्रेरित प्रतीत होता है एवं यह तैलचित्र हार्डबोर्ड पर अंकित किया गया है।

'मृदंग वादक' चित्र जलरंग से कागज पर चित्रित है। काले, भूरे-रंग के तूलिकाघातों द्वारा कुछ ही रेखाओं से यह चित्र अंकित किया है। मृदंग वादक चित्र देखने में त्वरित रेखांकन प्रतीत होता है। साधारणत: चित्रकार चित्र में स्वर तथा ध्वनि की अनुभूति कराने में असमर्थ रहते हैं लेकिन जगदीश गुप्त जी इस चित्र में ध्वनि (स्वर) की अनुभूति कराने में पूर्णत: सफल हुए हैं। पूरे चित्र का वातावरण ध्वनि से प्रभावित है। चित्र को देखकर मृदंग बजने की ध्वनि का आभास होता है यह चित्र तूलिका रेखाचित्र है।

जगदीश गुप्त जी जब यात्राओं में अथवा भ्रमण करने जाते थे, तो उनकी दृष्टि इतिहासवेत्ता और चित्रकार की होती थी। कोई भी चित्र तथा मूर्ति जो उन्हें अच्छे लगते थे उन्हें तुरंत रेखांकित कर लेते, और उनमें से जो उन्हें अधिक प्रभावित करते तथा जिस पर वे जरूरी समझते थे उन्हें रंगों से चित्रित करते थे। दक्षिण भारत के किसी मंदिर की रॉक पेंटिंग के अच्छे आकारों से प्रभावित होकर कुछ अनुकृतियाँ चित्रित की हैं। कागज के ऊपर भूरे रंग के बारीक ब्रश स्ट्रोक्स से लयात्मक चित्रण किया है। बीच-बीच में सफेद रंग वे. तूलिकाघातों के प्रयोग से आकृति में अत्यधिक कोमलता लोच एवं लय का आभास होता है। कुण्डलित रेखाएँ चित्र में लयपूर्ण गति को व्यक्त करती हैं। एक अन्य पेंटिंग जिसमें दो टेराकोटा आकृतियों को एक साथ संयोजित करके चित्रित किया गया है। दो पृथक् आकृतियों के पृथक् मूड को एक साथ कर, जैसे कुछ संवाद करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई हो तथा दो मनोभावों को एक सूत्र में पिरो कर विशेष मनोभाव को चित्रित किया है सम्पूर्ण चित्रक्षेत्र उर्ध्व और क्षैतिज दिशा में चार भागों में विभाजित है। जिसमें विरोधी रंगत काले तथा सफेद से सामंजस्य स्थापित किया गया है। जिसके ऊपर दो टेराकोटा आकृतियों को कोलाज की तरह संतुलित अनुपात में चित्रित करके एक संयोजन (Composition) तैयार कर दिया है। आकृतियों में पर्याप्त छाया प्रकाश के द्वारा त्रिआयामी (3D) प्रभाव उत्पन्न किया गया है। यह चित्र तैलरंगों से हार्डबोर्ड पर चित्रित है।

गुप्त जी सदैव शिलाचित्रों, भित्तिचित्रों, बालकला तथा मृण्मूर्तियों से प्रेरित रहे। उनका विचार था इनसे प्रेरणा ग्रहण करन. विदेशी वादों के अनुकरण से कही अधिक श्रेयस्कर है। इन्हीं से प्रेरणा ग्रहण करके वे अपनी कलाकृतियों में प्रागैतिहासिक कला एवं आधुनिक कला में सामंजस्य स्थापित करते रहे।

जैसे आधुनिक कला के जन्मदाता पाल सेजान की कला से स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी कलाओं क. अध्ययन करके उन्होंने आधुनिक कला को जन्म दिया। उसी प्रकार जगदीश गुप्त ने प्रागैतिहासिक चित्रकला का अध्ययन करके अपनी आधुनिक शैली को जन्म दिया। कला के स्वरूप में परिवर्तन सचेत व प्रभावी रखने के विचार से यह वांछनीय है।

* ioDRkk] fp=dyk foHkkx] vkn'k lxhr egkfo|ky;] lkxj ¼e-i-½

lnHk xFk

1-कैटलॉग : चार दिवसीय चित्रकला कार्यशाला, कवि-चित्रकार जगदीश गुप्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित, रूचीज इन्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव आर्ट्स, इलाहाबद 25-28 जून, 1996

2-शुक्ल, रामचन्द्र : कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ, पृ. 10-11, प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तरप्रदेश, 1958, प्रथम संस्करण

3-गुप्त जगदीश : भारतीय कला के पदचिन्ह, पृ.-ज, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1961, प्रथम संस्करण